



0961CH09

नवमः पाठः
सिकतासेतुः

प्रस्तुतः नाट्यांशः सोमदेवविरचितः “कथासरित्सागरः” इत्यस्य सप्तमाध्यायोपरि आधारितोऽस्ति। अस्मिन् नाट्यांशे तपसा विद्यां प्राप्तुं यत्नशीलः कश्चित् तपोदत्तनामकः कुमारः चित्रितः अस्ति। तस्य मार्गदर्शनाय पुरुषवेषधारी देवराजः इन्द्रः तत्र आगतवान्। तत्र आगत्य देवराजः सिकताभिः सेतुनिर्माणार्थं प्रयतते। एतद् दृष्ट्वा तपोदत्तः प्रहसन् वदति किमर्थं भो ! बालुकाभिः जलबन्धं निर्मासि? ततो देवराजः प्रतिवक्तिं यद् यद् अध्ययनं श्रवणं पठनं विना यदि त्वं विद्यां प्राप्तुं शक्नोषि तदा अहमपि बालुकाभिः सेतुनिर्माणं कर्तुं शक्नोमि। देवराजस्य अभिप्रायं ज्ञात्वा तपोदत्तः विद्याप्राप्तिकामः गुरुकुलं गतवान्।

(ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः)

तपोदत्तः - अहमस्मि तपोदत्तः। बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाऽधीतवानस्मि। तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्।
(ऊर्ध्वं निःश्वस्य)

हा विधे! किम् इदं मया कृतम्? कीदृशी दुर्बुद्धि आसीत् तदा। एतदपि न चिन्तितं यत्-

परिधानैरलङ्घारैर्भूषितोऽपि न शोभते।

नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे॥1॥

(किञ्चिद् विमृश्य)

भवतु, किम् एतेन? दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो मन्यते। अतोऽहम् इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

(जलोच्छलनध्वनिः श्रूयते)

अये कुतोऽयं कल्लोलोच्छलनध्वनिः? महामत्स्यो मकरो वा भवेत्। पश्यामि तावत्।

(पुरुषमेकं सिकताभिः सेतुनिर्माण-प्रयासं कुर्वण्ं दृष्ट्वा सहासम्)
 हन्त! नास्त्यभावो जगति मूर्खाणाम्! तीव्रप्रवाहायां नद्यां मूढोऽयं सिकताभिः सेतुं
 निर्मातुं प्रयतते!
 (साट्टहासं पाश्वमुपेत्य)



भो महाशय! किमिदं विधीयते! अलमलं तव श्रमेण। पश्य,
 रामो बबन्ध यं सेतुं शिलाभिर्मकरालये।
 विदधद् बालुकाभिस्तं यासि त्वमतिरामताम्॥२॥
 चिन्तय तावत्। सिकताभिः क्वचित्सेतुः कर्तुं युज्यते?

- पुरुषः** - भोस्तपस्विन्! कथं माम् अवरोधं करोषि। प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति? कावश्यकता
 शिलानाम्? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि स्वसंकल्पदृढतया।
- तपोदत्तः** - आश्चर्यम् किम् सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि? सिकता जलप्रवाहे स्थास्यन्ति
 किम्? भवता चिन्तितं न वा?

पुरुषः - (सोत्रासम्) चिन्तितं चिन्तितम्। सम्यक् चिन्तितम्। नाहं सोपानसहायतया अधि
रोद्धुं विश्वसिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

तपोदत्तः - (सव्यडग्यम्)
साधु साधु! आज्जनेयमप्यतिक्रामसि!

पुरुषः - (सविर्मर्शम्)
कोऽत्र सन्देहः? किञ्च,
विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव केवलम्।
यदि विद्या वशे स्युस्ते, सेतुरेष तथा मम॥३॥

तपोदत्तः - (सवैलक्ष्यम् आत्मगतम्)
अये! मामेवोदिश्य भद्रपुरुषोऽयम् अधिक्षिपति! नूनं सत्यमत्र पश्यामि। अक्षरज्ञानं
विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषामि! तदियं भगवत्याः शारदाया अवमानना।
गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते।
(प्रकाशम्)
भो नरोत्तम! नाऽहं जाने यत् कोऽस्ति भवान्। परन्तु भवदिभः उन्मीलितं मे
नयनयुगलम्। तपोमात्रेण विद्यामवाप्तुं प्रयतमानः अहमपि सिकताभिरेव
सेतुनिर्माणप्रयासं करोमि। तदिदानीं विद्याध्ययनाय गुरुकुलमेव गच्छामि।
(सप्रणामं गच्छति)

शब्दार्थः

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------------------|-------------------------------|
| सिकता | बालुका | रेत | Sand |
| सेतुः | जलबन्धः | पुल | Bridge |
| तपस्यारतः | तपः कुर्वन् | तपस्या में लीन | Performing penance |
| पितृचरणैः | तातपादैः | पिताजी के द्वारा | By father |
| क्लेश्यमानः | संताप्यमानः | व्याकुल किया जाता हुआ | Troubled |
| अधीतवान् | अध्ययनं कृतवान् | पढ़ा | (He) Studied |
| कुटुम्बिभिः | परिवारजनैः | कुटुम्बियों द्वारा | By family members |
| ज्ञातिजनैः | बन्धुबान्धवैः | बन्धु-बान्धवों द्वारा | By paternel family members |
| गर्हितः | निन्दितः | अपमानित | Instulted |

| | | | |
|----------------|-----------------------|--------------------------------------|----------------------------|
| निःश्वस्य | दीर्घश्वासं त्यक्त्वा | लम्बी साँस छोड़कर | Exhaling |
| दुर्बुद्धिः | दुर्मतिः | दुष्ट बुद्धिवाला | Foolishness |
| परिधानैः | वस्त्रैः | कपड़ों से, पहनावों से | By dress |
| मार्गभ्रान्तः | पथभ्रष्टः | राह से भटका हुआ | Astray |
| उपैति | प्राप्नोति, | जाता है, समीप जाता है | (He/she) goes near |
| | समीपं गच्छति | | |
| तपश्चर्यया | तपसा | तपस्या के द्वारा | By performing penance |
| जलोच्छलनध्वनिः | जलोर्ध्वगतेः शब्दः | पानी के उछलने की आवाज | Sound of water |
| कल्लोच्छलनः- | तरङ्गोच्छलनस्य शब्दः | तरंगों के उछलने की ध्वनि | Sound of splash of tides |
| ध्वनिः | | | |
| कुर्वाणम् | कुर्वन्तम् | करते हुए | Performing |
| सहासम् | हासपूर्वकम् | हँसते हुए | Laughingly |
| सोत्यासम् | उपहासपूर्वकम् | खिल्ली उड़ाते हुए, चुटकी लेते हुए | Ridiculing |
| साद्टहासम् | अट्टहासपूर्वकम् | जोर से हँसकर | With a loud laughter |
| अट्टम् | अट्टालिकाम् | अटारी को | High building |
| अधिरोहुम् | उपरि गन्तुम् | चढ़ने के लिए | For going up |
| आञ्जनेयम् | हनुमन्तम् | अञ्जनिपुत्र हनुमान् को | To son of Anyana (Hanuman) |
| सविमर्शम् | विचारसहितम् | सोच-विचार कर | With thought |
| सवैलक्ष्यम् | सलज्जम् | लज्जापूर्वक | With shyness |
| वैदुष्यम् | पाण्डित्यम् | विद्वत्ता | Esudition |
| उन्मीलितम् | उद्घाटितम् | खोल दी | Opened (n.) |

अन्वयः

निर्मणं भोगीव नरःसभायां यदि वा गृहे परिधानैः अलङ्कारैः भूषितः अपि (विद्यां विना) न शोभते॥1॥

रामः मकरालये यं सेतुं शिलाभिः बबन्ध, तं बालुकाभिः विद्धत् त्वम् अतिरामतां यासि॥2॥
यदि विद्या लिप्यक्षरज्ञानं विना केवलं तपोभिः एव ते वशे स्युः तथा एषः सेतुः मम (स्यात्)॥3॥

अध्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) कः बाल्ये विद्यां न अधीतवान्?
- (ख) तपोदत्तः कया विद्याम् अवाप्तुं प्रवृत्तः अस्ति?
- (ग) मकरालये कः शिलाभिः सेतुं बबन्ध?
- (घ) मार्गश्रान्तः सन्ध्यां कुत्र उपैति?
- (ङ) पुरुषः सिकताभिः किं करोति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत्?
- (ख) तपोदत्तः केन प्रकारेण विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्?
- (ग) तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहसत्?
- (घ) तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः कीदृशः कथितः?
- (ङ) अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय कुत्र गतः?

3. भिन्नवर्गीयं पदं चिनुत-

यथा- अधिरोहुम्, गन्तुम्, सेतुम्, निर्मातुम्।

- (क) निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य।
- (ख) विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलषामि।
- (ग) तपोभिः, दुर्बुद्धिः, सिकताभिः, कुटुम्बिभिः।

4. (क) रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

- (i) अलमलं तत्र श्रमेण।
- (ii) न अहं सोपानमार्गेरट्टमधिरोहुं विश्वसिमि।
- (iii) चिन्तितं भवता न वा।
- (iv) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः।
- (v) भवदिभः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्।

(ख) अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति?

| कथनानि | कः | कम् |
|---|-------|-------|
| (i) हा विधे! किमिदं मया कृतम्? | | |
| (ii) भो महाशय! किमिदं विधीयते। | | |
| (iii) भोस्तपस्त्विन्! कथं माम् उपरुणत्सि। | | |

- (iv) सिकता: जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्?
 (v) नाहं जाने कोऽस्ति भवान्?

5. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) तपोदत्तः तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्ति।
 (ख) तपोदत्तः कुटुम्बिभिः मित्रैः गर्हितः अभवत्।
 (ग) पुरुषः नद्यां सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते।
 (घ) तपोदत्तः अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति।
 (ङ) तपोदत्तः विद्याध्ययनाय गुरुकुलम् अगच्छत्।
 (च) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासः करणीयः।

6. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि लिखत-

| विग्रहपदानि | समस्तपदानि |
|-------------------------|----------------|
| यथा- संकल्पस्य सातत्येन | संकल्पसातत्येन |
| (क) अक्षराणां ज्ञानम् | |
| (ख) सिकतायाः सेतुः | |
| (ग) पितुः चरणैः | |
| (घ) गुरोः गृहम् | |
| (ङ) विद्यायाः अभ्यासः | |

(अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत-

| समस्तपदानि | विग्रहः |
|------------------------|---------------|
| यथा- नयनयुगलम् | नयनयोः युगलम् |
| (क) जलप्रवाहे | |
| (ख) तपश्चर्यया | |
| (ग) जलोच्छलनध्वनिः | |
| (घ) सेतुनिर्माणप्रयासः | |

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनं वाक्यद्वयं रचयत-

- (क) यथा- अलं चिन्तया। ('अलम्' योगे तृतीया)

| | | |
|-----------------------------|-------|-----------------------|
| (i) | | (भय) |
| (ii) | | (कोलाहल) |
| (ख) यथा- माम् अनु स गच्छति। | | ('अनु' योगे द्वितीया) |

| | | |
|----------|---|-------------------------|
| | (i) | (गृह) |
| | (ii) | (पर्वत) |
| (ग) यथा- | अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलषसि। | (‘विना’ योगे द्वितीया) |
| | (i) | (परिश्रम) |
| | (ii) | (अभ्यास) |
| (घ) यथा- | सन्ध्यां यावत् गृहमुपैति। | (‘यावत्’ योगे द्वितीया) |
| | (i) | (मास) |
| | (ii) | (वर्ष) |

←→ योग्यताविस्तारः ←→

यह नाट्यांश सोमदेवरचित कथासरित्सागर के सप्तम लम्बक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिए वेष बदलकर इंद्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतुनिर्माण के कार्य में लग जाते हैं। उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है-‘अरे! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो?’ इंद्र उन्हें उत्तर देते हैं-यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी संभव है।

(क) **कवि परिचय** - कथासरित्सागर के रचयिता कश्मीर निवासी श्री सोमदेव भट्ट हैं। ये कश्मीर के राजा श्री अनन्तदेव के सभापण्डित थे। कवि ने रानी सूर्यमती के मनो-विनोद के लिए कथासरित्सागर नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ का मूल, महाकवि गुणाद्य की बृहत्कथा (प्राकृत भाषा का ग्रन्थ) है।

(ख) **ग्रन्थ परिचय** - कथासरित्सागर अनेक कथाओं का महासमूह है। इस ग्रन्थ में अठारह लम्बक हैं। मूलकथा की पुष्टि के लिए अनेक उपकथाएँ वर्णित की गई हैं। प्रस्तुत कथा रत्नप्रभा नामक लम्बक से सङ्कलित की गई है। ज्ञान-प्राप्ति केवल तपस्या से नहीं, बल्कि गुरु के समीप जाकर अध्ययनादि कार्यों के करने से होती है। यही इस कथा का सार है।

(ग) **पर्यायवाचिनः शब्दाः-**

| | | |
|------------|---|------------------------------|
| इदानीम् | - | अधुना, साम्प्रतम्, सम्प्रति। |
| जलम् | - | वारि, उदकम्, सलिलम्। |
| नदी | - | सरित्, तटिनी, तरङ्गिणी। |
| पुरुषार्थः | - | उद्योगः, उद्यमः, परिश्रमः। |

(घ) विलोमशब्दः-

| | | |
|-------------|---|-----------|
| दुर्बुद्धिः | - | सुबुद्धिः |
| गर्हितः | - | प्रशंसितः |
| प्रवृत्तः | - | निवृत्तः |
| अभ्यासः | - | अनभ्यासः |
| सत्यम् | - | असत्यम् |

- (ङ) **आत्मगतम्** - नाटकों में प्रयुक्त यह एक पारिभाषिक शब्द है। जब नट या अभिनेता रंगमञ्च पर अपने कथन को दूसरों को सुनाना नहीं चाहता, मन में ही सोचता है तब उसके कथन को 'आत्मगतम्' कहा जाता है।
- (च) **प्रकाशम्** - जब नट या अभिनेता के संवाद रंगमञ्च पर दर्शकों के सामने प्रकट किये जाते हैं, तब उन संवादों को 'प्रकाशम्' शब्द से सूचित किया जाता है।
- (छ) **अतिरामता** - राम से आगे बढ़ जाने की स्थिति को 'अतिरामता' कहा गया है-रामम् अतिक्रान्तः = अतिरामः, तस्य भावः = अतिरामता। राम ने शिलाओं से समुद्र में सेतु का निर्माण किया था। विप्र-रूपधारी इन्द्र को सिकता-कणों से सेतु बनाते देख तपोदत्त उनका उपहास करते हुए कहता है कि तुम राम से आगे बढ़ जाना चाहते हो।
निम्नलिखित कहावतों को पाठ में आए हुए संस्कृत वाक्यांश में पहचानिये-
- (i) सुबह का भूला शाम को घर लौट आये, तो भूला नहीं कहलाता है।
 - (ii) मेरी आँखें खुल गईं।
- (ज) **आञ्जनेयम्** - अञ्जना के पुत्र होने के कारण हनुमान् को आञ्जनेय कहा जाता है। हनुमान् उछलकर कहीं भी जाने में समर्थ थे। इसलिए इन्द्र के यह कहने पर कि मैं सीढ़ी से जाने में विश्वास नहीं करता हूँ अपितु उछलकर ही जाने में समर्थ हूँ, तपोदत्त फिर से उपहास करते हुए कहता है कि पहले आपने पुल निर्माण में राम को लाँघ लिया और अब उछलने में हनुमान् को भी लाँघने की इच्छा कर रहे हैं।
- (झ) **अक्षरज्ञानस्य माहात्म्यम्-**
- (i) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
 - (ii) किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।
 - (iii) यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयते।
तस्य दिवाकरकिरणैः नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धिः॥